INTERNATIONAL CONFERENCE ON RECENT CHALLENGES IN SCIENCE, ENGINEERING, MANAGEMENT, ARTS & HUMANITIES (ICRCSEMAH – 2022)

28TH AUGUST, 2022

CERTIFICATE NO : ICRCSEMAH/2022/C0822722

सड़क के बच्चों की आर्थिक स्थिति : आगरा शहर के संदर्भ में एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

Sweta

Research Scholar, Department of Sociology, Dr. B. R. Ambedkar University, Agra, India

Dr. Mohd. Arshad

Professor & Head, Department of Sociology, Dr. B. R. Ambedkar University, Agra, India

सारांश

औद्योगिक क्रांति के बाद से सड़क के बच्चे एक वैश्विक मुद्दा बन गया है। विभिन्न कारणों से भारत और अन्य विकासशील देशों में बल्कि औद्योगीकरण और शहरीकरण वाले कुछ विकसित देशों में भी सड़क के बच्चे एक घृणित समस्या है। दूर–दराज के और ग्रामीण क्षेत्रों के गरीबों का उनके सुलभ शहरों में प्रवासन हो रहा है ताकि उन्हें कुछ हद तक सामान्य जीवन सुनिश्चित करने के लिए नियमित रोजगार मिलने की सकारात्मक आशा है। ऐसे गरीब, असहाय लोग मलिन बस्तियों, फुटपाथों, रेलवे प्लेटफार्मों और परित्यक्त निर्माण स्थलों में बस जाते हैं। उसके बाद, अपनी आजीविका कमाने के लिए, इन परिवारों के बुजुर्ग अपने बच्चों को कमाई की गतिविधियों में भेजते हैं, जैसे कूड़ा बीनना, भीख माँगना, ट्रेन के डिब्बों की सफाई, यात्री बसों और इसी तरह की कई अन्य गतिविधियाँ। सड़क का जीवन बच्चों के अस्तित्व के लिए एक चुनौतीपूर्ण जीवन है ये बच्चे शहरी जीवन की सुख सुविधाओं से वंचित, अदृश्य अस्तित्व लिए हुए गंदे पैर, फटे कपड़े, आधे नग्न या बिना कपड़ों के, बहती नाक, बिखरे बाल, नशीले पदार्थ के प्रभाव से लक्ष्यहीन होकर शब्दहीन होते हुए वंचित चेहरे से सड़क पर ही जीवन व्यतीत करते हैं।

यह अध्ययन भारत के आगरा शहर के 6–14 वर्ष तक के सड़क के बच्चों की आर्थिक स्थिति पर केन्द्रित है। शोध पर तथ्य संकलन के लिए शोधकर्ता ने आगरा शहर की व्यस्त सड़क व बाजार सड़क पर सर्वेक्षण करने के लिए उत्तरदाताओं के चयन हेतु सोद्देश्यपूर्ण निर्दशन प्रविधि एवं स्नोवॉल प्रविधि का चयन किया है। अध्ययन के लिए नमूने में 200 सड़क के बच्चे हैं। सर्वेक्षण साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से आयोजित किया गया है। इस शोध में शोधकर्ता ने शोध के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए अन्वेषणात्मक एवं वर्णनात्मक अनुसंधान अभिकल्प का चयन किया है। अध्ययन में मात्रात्मक तथा गुणात्मक दोनों शोध पद्धतियों को नियोजित किया गया।

यह अध्ययन उपर्युक्त विषय पर महत्वपूर्ण तथ्यों को उजागर करता है कि गरीबी के कारण सड़क के बच्चों की न्यूनतम आवश्यकता की पूर्ति होना कठिन है। गरीबी के कारण बच्चों के पालन–पोषण एवं पारिवारिक ढाँचे पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। संयुक्त परिवारों में आजीविका का अधिक स्त्रोत न होने कारण बच्चों से भीख माँगने, मजदूरी कराने को मजबूर कराया जाता है। 41.5 प्रतिशत बच्चें 81–100 रू0 तक प्रतिदिन की आय करते थे 20 प्रतिशत बच्चे 100 रू0 कमाते थे प्रतिदिन की यह संयुक्त परिवार में बहुत कम होने के कारण न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति होना भी कठिन है।

शब्दकुंजी *सड़क के बच्चे, आर्थिक स्थिति, न्यूनतम आवश्यकता, समाजशास्त्रीय अध्ययन*